इ़ल्मे ग़ैब
प्रोफ़ेसर डॉ० मुहम्मद मसऊ़द अह़मद मुजद्दिदी
एम०ए०, पी०एच०डी०
—: नाशिर :—
मदीनतुल उलूम इन्सटीटयुट, तोप्सिया
ऑल इण्डिया तबलीग़े सीरत, पश्चिम बंगाल

وَعِنۡدَهٗ مَفَاتِحُ الۡغَيۡبِ لَا يَعۡلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَ (انعام : ٥٩)

और उसी के पास हैं कुन्जियाँ ग़ैब की, उन्हें वही जानता है (इनाम : 59)

इ़ल्मे ग़ैब

मुसन्निफ़

प्रोफ़ेसर डॉ० मुह़म्मद मसऊ़द अह़मद मुजद्दिदी

एम०ए०, पी०एच०डी०

तर्जमा

मोग़ीस़ अहमद खाँन क़ादिरी

(सुलतानपुरी)

नाशिर

ऑल इण्डिया तबलीग़े सीरत, पश्चिम बंगाल

—: पैग़ाम :—

17 फ़रवरी 2010

मुझे यह जानकर बेहद मर्सरत (खुशी) हुई कि सरवरे काएनात सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की विलादते बा सआ़दत के मुबारक व मसऊ़द मौक़ा पर ऑल इण्डिया तबलीग़े सीरत, पश्चिम बंगाल 12 मुफ़ीद किताबों की कहकशाँ सजा रही है। मेरा कई सालों से यह मुशाहदा है कि हमारी जमात में कई ऐसे फअ़आल नौजवान बड़े हौसले के साथ मैदाने तख़लीक़ो तह़क़ीक़ (Research) में अपनी ख़िदमात पेश करने के लिये मुसलसल सई (कोशिश) कर रहे हैं। जिसका अस़र यह है कि लिखने वालों को तह़रीक मिली और पढ़ने वालों के ज़ौक़ो शौक़ को बालीदगी। जो हमारी जमात के लिये बड़ी मुअस्सि़र और खुश आइन्द बात है।

मौलाना मुजाहिद हुसैन ह़बीबी क़ादिरी का शुमार जमाअ़ते अहले सुन्नत के उन फ़ाज़िल नौजवानों में होता है जिनसे मुस्तक़बिल (Future) में बड़ी उम्मीदें वाबस्ता हैं। मौसूफ़ महनामा ''तबलीग़े सीरत'' की इशाअ़त के ज़रिया खित्त–ए–बंगाल में मज़हबो मसलक की गेराँ क़द्र ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं।

तबलीग़े सीरत ने जिन 12 कुतुब (किताबों) की इशाअ़त का फ़ैसला किया है वो अपने मौज़ूआ़त के इन्तिख़ाब के ह़वाले से क़ाबिले तह़सीन अ़मल है, जिसमें अ़क़ाएद की दुरूस्तगी के साथ–साथ इस्लाह़े उम्मत का भी ख़्याल रखा गया है। मैं समझता हूँ कि अपने आक़ा सययिदे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सच्ची मुहब्ब्त के इज़हार का यह सबसे बेहतर तरीक़ा है।

मैं मौलाना मुजाहिद हुसैन ह़बीबी साह़ब और उनके रोफ़क़ा (साथियों) को उनकी इस काविश पर दिली मुबारकबाद पेश करता हूँ कि मौला त़आ़ला उनके इस नेक अ़मल को शर्फ़े कुबूलियत अ़ता फरमाए और मुस्तक़बिल में मज़ीद तर (और ज़्यादा) की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन बिजाही सय्यदिल मुरसलीन सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

(प्रोफ़ेसर) सैयद मुह़म्मद अमीन क़ादिरी

ख़ादिम सज्जादा आस्ताना आ़लिया, बरकातिया, मारहरा शरीफ़

ह़ाल मुक़ीम, कबीर कालोनी, जमालपुर, अलीगढ़

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ وَ نُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ۔

इ़ल्म एक अ़ज़ीम कुव्वत है, दौरे जदीद (नए दौर) में इ़ल्म की अहमियत व कुव्वत और नुमांया होकर सामने आ गई है, कुरआने करीम ने इन्सान को लिखने पढ़ने [1] और तह़सीले इ़ल्म (इ़ल्म ह़ासिल करने) की तरफ मुतवज्जे किया [2] और इन्सान को वह राज़हा–ए–सरबस्ता (छुपे राज़) बताए कि उसका दिमाग़ रौशन हो गया ––––– कुरआने करीम इ़ल्म और दानिश (अ़क़्ल) का अ़ज़ीम ख़जाना है इसमें इ़ल्म और मुश्तक़ाते इ़ल्म का 800 से ज़्यादा मक़ामात पर ज़िक्र किया गया है और किताब व किताबत का 600 से ज़्यादा मक़ामात पर ज़िक्र किया गया है ––––– इससे कुरआने करीम की नज़र में इ़ल्म की अहमियत का अंदाज़ा होता है ––––– हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ''मैं मुअ़ल्लिम (सिखाने वाला) बनाकर भेजा गया हूँ''[3] आपने इ़ल्म ह़ासिल करने की ताकीदे शदीद फ़रमाई (यानी बार–बार कहा) और इ़ल्म की फ़ज़ीलत को आशकार (उजागर) फ़रमाया [4] ––––– ह़ज़रते अ़ली कर्रमल्लाहु वज–हहुल करीम ने फ़रमाया कि, ''फ़ज़ीलत तो सिर्फ़ अहले इ़ल्म को है'' [5] खुद कुरआने करीम में ह़ज़रते तालूत अ़लैहिस्सलाम को इ़ल्म ही की वजह से बनी इसराईल का बादशाह बनाया गया [6] ––––– और इ़ल्म ही की वजह से ह़ज़रते आदम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रिश्तों पर फ़ज़ीलत पाई [7] ––––– इससे अन्दाज़ा होता है कि नुबूवतो रिसालत और क़ियादतो बादशाहत के लिये इ़ल्म कितना अहम है –––––

इ़ल्म दो क़िस्म का है ––––– एक वह जो हम मदरसों, स्कूलों, कॉलेजों और यूनिवर्सिटियों में ह़ासिल करते हैं ––––– हम इसी को इ़ल्म समझते हैं और इसी पर यक़ीन रखते हैं लेकिन एक इ़ल्म वह है जो बराहे रास्त (डायरेक्ट) पढ़ाया जाता है ––––– इसके लिये न किसी मदरसे की ज़रूरत, न स्कूल की ज़रूरत, न कॉलेज की ज़रूरत, न यूनिवर्सिटी की ज़रूरत ––––– यह एक पोशीदा (छुपा हुआ) इ़ल्म है जिसको कुरआने

हक़ीम ने ''इल्मे ग़ैब'' से ताबीर फ़रमाया है [8] और इस पर ईमान लाना हर मुसलमान की निशानी क़रार दिया [9] ---- यह इल्म वह है जिसको न इन्सानी अ़क्ल पा सकती है और न उसके ज़ाहिरी व बातिनी ह़वास (Sences) ---- यह इल्म सारे उ़लूम पर ग़ालिब है और तह़सील (ह़ासिल करने) व कस्ब (मेह़नत) से इसका कोई तअ़ल्लुक़ नहीं ---- येह मह़ज़ अल्लाह के फ़ज़्लो करम से बारिश की तरह़ बरसता है, चश्मे की तरह़ उबलता है।

कुरआने ह़कीम ने बहुत सी आयात (आयतों) में ''इल्मे ग़ैब'' का ज़िक्र किया है और येह बताया है कि येह इल्म अल्लाह और सिर्फ़ अल्लाह ही के लिये स़ाबित है ---- मसलन येह आयात मुलाह़ज़ा हों :-

1:- और उसी के पास हैं कुन्जियाँ ग़ैब की उन्हें वही जानता है।[10]
2:- मैं जानता हूँ आसमानों और ज़मीनों की सब छुपी चीज़ें। [11]
3:- तुम फ़रमाओ, ग़ैब तो अल्लाह के लिये है।[12]

और हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से येह फ़रमाया कि आप भी ऐलान फ़रमा दीजिये :-

4:- तुम फ़रमा दो, तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न येह कहूँ कि मैं आप (खुद से) ग़ैब जान लेता हूँ।[13]

इन आयात से मालूम हुआ कि ''ग़ैब'' अल्लाह ही के लिये है ---- कोई खुद से ''ग़ैब'' नहीं जानता और न बग़ैर अ़ता-ए-इलाही किसी के पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं ---- इन आयात पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि अल्लाह ने कहीं येह न फ़रमाया कि येह ''इल्मे ग़ैब'' हम किसी को अ़ता नहीं फ़रमाते और येह ख़ज़ाने हम किसी को नहीं देते ---- यही सबसे अहम नुक़्ता है जिस पर मुसलमानों को ग़ौर करना चाहिये ---- अल्लह तआ़ला ने कुरआने ह़कीम में इरशाद फ़रमाया :-

1:- ग़ैब का जानने वाला वही है, सो वह अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला (बा खबर) नहीं करता, हाँ मगर अपने किसी बर्गुज़ीदा पैग़म्बर को।[14]

2:– और अल्लाह तआ़ला ऐसे उमूरे ग़ैबिया (ग़ैबी बातों) पर तुम को मुत्तला नहीं करते लेकिन हाँ जिसको खुद चाहें और वह अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बर हैं, उनको मुन्तख़ब फ़रमा लेते हैं।[15]

फिर यही नहीं कि सिर्फ़ यह बात कही गई हो और ''इ़ल्मे ग़ैब'' अ़ता न किया गया हो, नहीं–नहीं, अल्लाह तआ़ला ने अपने बर्गज़ीदा पैग़म्बरों को यह इ़ल्म अ़ता भी फ़रमाया जिसका कुरआने करीम में तफ़सील से ज़िक्र है। मसलन यह आयात मुलाहज़ा फ़रमाइये :–

1:– और इ़ल्म दे दिया अल्लाह तआ़ला ने आदम को सब चीजों के असमा (नामों) का फिर वह चीज़े फ़रिश्तों के रूबरू कर दीं।[16]

2:– हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के लिये फ़रमाया : और जो भी मंजूर हुआ उनको तालीम फ़रमाया।[17]

3:– हज़रत सुलेमान अ़लैहिस्सलाम ने ''इ़ल्मे ग़ैब'' का यूँ ज़िक्र फ़रमाया : ऐ लोगो! हमको परिन्दों की बोली की तालीम की गई हैं और हमको हर क़िस्म की चीज़ें दी गयीं हैं।[18]

4:– हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम के लिये फ़रमाया : और लूत को हमने हि़कमत और इ़ल्म अ़ता फ़रमाया।[19]

5:– हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम के लिये फ़रमाया : और वह बिला शुबहा बड़े आ़लिम थे इस वजह से कि हमने उनको इ़ल्म दिया था लेकिन अक्स़र इसका इ़ल्म नहीं रखते।[20]

6:– हज़रत याकूब अ़लैहिस्सलाम ने खुद भी अपने बेटों के सामने इस अ़ता–ए–रब्बानी का इज़हार करते हुए फ़रमाया : क्यों, मैंने तुमसे कहा न था कि अल्लाह की बातों को जितना मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।[21]

7:– हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के लिये फ़रमाया : और जब वह अपनी जवानी को पहुँचे हमने उनको हि़कमत और इ़ल्म अ़ता फ़रमाया।[22]

8:– और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के लिये फ़रमाया : और जब अपनी भरी जवानी को पहुँचे और दुरूस्त हो गए, हमने उनको हि़कमत और इ़ल्म अ़ता फ़रमाया।[23]

9:– और हज़रत ख़िज़र अ़लैहिस्सलाम के लिये फ़रमाया : उन्होंने हमारे

बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिनको हमने अपनी ख़ास रहमत दी थी और हमने उनको अपने पास से ख़ास तौर का इ़ल्म सिखाया था।[24] इन आयात से मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बर्गज़ीदा नबियों को "इ़ल्मे ग़ैब" अ़ता फ़रमाया लेकिन अक्स़र लोग नहीं जानते ––––– इन हज़राते कुदसिया ने कभी–कभी इस इ़ल्म का इज़हार भी फरमाया जैसा के कुरआने करीम में ह़ज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम अपने पैरूकारों से यह इरशाद फ़रमा रहे हैं :

10:– और मैं तुमको बतला देता हूँ, जो कुछ अपने घरों में खाते हो और जो रख आते हो।[25] यानी जिसने जो कुछ अपने घर में खाया और जो कुछ घर में रखा सब आपकी नज़र में था ––––– ह़ज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम क़ैदखाने में क़ैदियों के ख़्वाब की ताबीर बताने से पहले फ़रमा रहे हैं :

11:– जो खाना तुम्हारे पास आता है और जो कि तुमको खाने के लिए मिलता है मैं उसके आने से पहले उसकी ह़क़ीक़त तुमको बतला देता हूँ यह बतला देना उस इ़ल्म की बदौलत है जो मुझको मेरे रब ने तालीम फ़रमाया है।[26]

इन आयतों से यह मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बर्गजीदा रसूलों को "इ़ल्मे ग़ैब" अ़ता फ़रमाया है, इस अ़ता–ए–ख़ास से इन्कार, कुरआन से इन्कार है ––––– यह इ़ल्म कोई मामूली इ़ल्म नहीं। बड़े एहतेमाम और तैयारी के बाद अ़ता फ़रमाया जाता है और जिसको अ़ता फ़रमाया जाता है उसके आगे और पीछे फ़रिश्तों के पहरे लगा दिये जाते हैं – इरशाद फ़रमाता है।

सो वह अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता, हाँ मगर अपने किसी बर्गज़ीदा पैग़म्बर को तो उस (पैग़म्बर) के आगे और पीछे मुहा़फ़िज़ (हि़फ़ाज़त करने वाले फ़िरिश्ते) भेज देता है।[27]

बेशक जिसको यह इ़ल्म अ़ता किया गया उसको बहुत कुछ अ़ता किया गया ––––– तमाम अम्बिया–ए–किराम अ़लैहिमुस्सलाम को यकसाँ

(एक जैसा) ''इ़ल्मे ग़ैब'' ह़ासिल नहीं बल्कि जिस तरह़ अम्बिया व रुसुल (रसूलों) में दरजात हैं।[28]

इस तरह़ इ़ल्मे ग़ैब भी दरजा–ब–दरजा अ़ता किया गया है ––––– कुरआने ह़कीम से इसकी तसदीक़ (सच्चाई साबित) होती है। ह़ज़रते मूसा अ़लैहिस्सलाम की ह़ज़रत ख़िज़र अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई और ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने वह इ़ल्मे ग़ैब सीखने की दरख़्वास्त की जो अल्लाह ने उनको अ़ता फ़रमाया था। ह़ज़रत ख़िज़र अ़लैहिस्सलाम ने दरख़्वास्त मंजूर की मगर यह हिदायत फ़रमाई की ''देखते जाना, बोलना नहीं, जब तक मैं न बोलूँ''[29] ––––– ह़ज़रत ख़िज़र अ़लैहिस्सलाम जो कुछ करते गए, ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम न समझ सके, आख़िर रहा न गया, पूछ लिया, ह़ज़रत ख़िज़र अ़लैहिस्सलाम ने राज़ से पर्दा उठा दिया मगर फिर ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को साथ न रखा ––––– यह पूरी तफ़सील कुरआने ह़कीम में मौजूद है[30] ––––– इस वाक़िया से अन्दाज़ा होता है कि तमाम अम्बिया को यकसाँ इ़ल्मे ग़ैब नहीं दिया गया। ''इ़ल्मे ग़ैब'' हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भी अ़ता फ़रमाया गया ––––– यह ''इ़ल्मे ग़ैब'' ही आपका बड़ा मोजिज़ा था, मुख़तलिफ़ अम्बिया को मुख़तलिफ मोजिज़ात दिये गए मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह मोजिज़ा अ़ता फ़रमाया ––––– कमो बेश एक लाख चौबीस हज़ार अम्बिया को जो ''इ़ल्मे ग़ैब'' दिया गया वह सब आपको दिया गया और उसके सिवा जो कुछ दिया वह सिवा–ए–अल्लाह के किसी को नहीं मालूम ––––– हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की सिफ़ाते ह़सना (ख़ूबि़यों) के जामेअ़ (संगम) थे और उनके उलूमो मआ़रिफ़ के भी जामेअ़ थे –––––

––––– हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जो कुछ दिया गया उसके मुतअ़ल्लिक़ इरशाद है

:और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे और अल्लाह का

तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है।[3]

इस आयत से यह मालूम हुआ कि अब कोई चीज़ ऐसी न रही जो आप न जानते हों, इसलिये इस नेमत को अल्लाह ने ''फ़ज़्ले अ़ज़ीम'' कहा है ———— हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जो कुछ पढ़ाया, अल्लाह ने पढ़ाया [32] ———— अगर उस्ताद शागिर्द से यह बात कहे, ''मैंने तुमको पढ़ाया है, तुम तो कुछ न जानते थे'', तो यह ह़क़ है गुस्ताख़ी और बे अदबी नहीं ———— लेकिन अगर कोई शागिर्द, अपने उस्ताद से यह कहे, ''तुम तो कुछ न जानते थे, तुम्हारे उस्ताद ने तुमको पढ़ाया है'' तो यह सरासर बे अदबी और गुस्ताख़ी होगी ———— तारीख़े इन्सानियत (आदमी के इतिहास) में ऐसा बे अदब शागिर्द नज़र नहीं आता ———— अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को पढ़ाया जो कुछ अ़ता फ़रमाया अल्लाह ही ने अ़ता फ़रमाया तो अगर उसने क़ुरआने करीम में अ़ता से पहले की कैफ़ियत (ह़ालत) को यूँ ब्यान फ़रमाया ———— مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَاالْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ(٣٣) [33] (तर्जमा आप नहीं जानते थे कि ईमान और किताब क्या चीज़ है?)

तो यह अल्लाह की शान के लाएक़ हैं, हमें ज़ेब नहीं देता कि बे अदब और गुस्ताख़ शागिर्द की तरह़ आपके हुज़ूर वह बात कहें जो ह़क़ जल्ल मजदुहू ने आपसे फ़रमाई ———— बेशक अल्लाह तआ़ला ने आपको ''इ़ल्मे ग़ैब'' अ़ता फ़रमाया। जो शख़्स इस फ़ज़्ले इलाही का इन्कार करता है या इसकी तख़फ़ीफ़ (कमी) करता है वह अल्लाह के फ़ज़्ल की तख़फ़ीफ़ (कमी) करता है जो ऐसा करता है उसको कौन मुसलमान कह सकता है?———— मुवह़ह़िद (खुदा को एक मानने वाले) की शान तो यह है कि वह अल्लाह के हर हुक्म का एह़तिराम करता है, उस पर खुद अ़मल करता है और दूसरों को अ़मल करवाता है ———— हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का दरबार बड़ा दरबार है, उनके हुज़ूर बुलन्द आवाज़ से बोलने वाले के आमाल भी ज़ाएअ़ (बरबाद) हो जाते हैं ———— उनकी मह़फ़िलें मुबारक से बिला इजाज़त उठने वाले को दर्दनाक अजा़ब की वई़द

(फटकार) सुनाई जा रही है———— आप भी सुनिये ———— इरशाद होता है : तुम लोग रसूल के बुलाने को ऐसा मत समझो जैसा तुम में एक, दूसरे को बुला लेता है। अल्लाह तआ़ला उन लोगों को जानता है जो आड़ (पर्दा) में होकर तुम में खिसक जाते हैं, सो जो लोग अल्लाह के हुक्म की मुख़ालफ़त करते हैं उनको इससे डरना चाहिये कि उन पर कोई आफ़त आ पड़े या उन पर कोई दर्दनाक अ़ज़ाब नाज़िल हो जाए।[34] आप खुद अन्दाज़ा लगाएँ कि जिस मह़फ़िले मुबारक का यह अदब हो उसमें रौनक़े मह़फ़िल सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का क्या अदब होगा?———— सह़ाबा किराम रदियल्लाहु अ़न्हुम उस मह़फ़िले पाक में सर झुकाए दम ब–खुद बैठे रहते ।

बात बात पर कहते, ''या रसूलल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर कुरबान!'' ———— हर सवाल का एक ही जवाब था, ''अल्लाह और उसका रसूल सबसे ज़्यादा जानते हैं'' ———— बेशक हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को उनके परवरदिगार ने ''इ़ल्मे ग़ैब'' अ़ता फ़रमाया, इस ह़क़ीक़त को तीन जिहतों (तरीक़ों) से समझा जा सकता हैः–

1ः– आपको बराहे रास्त (डायरेक्ट) ''इ़ल्मे ग़ैब'' अ़ता किया।
2ः– आपको कुरआन अ़ता फ़रमाया गया जो ''इ़ल्मे ग़ैब'' का ख़ज़ाना है।
3ः– आपको शाहिद (गवाह) बनाकर भेजा गया और शाहिद वही होता है जो वाक़िया के वक़्त मौजूद भी हो और देख भी रहा हो यानी उसको हर बात का ऐ़नुल यक़ीन (मुकम्मल यक़ीन) और ह़क़्कुल यक़ीन (यक़ीन का ह़क़्) ह़ासिल होता है।
(1) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ''इ़ल्मे ग़ैब'' को पहली जिहत (तरीक़ा) से देखा जाए तो यह आयात आपके ''इ़ल्मे ग़ैब'' की तसदीक़ करती है :–
1ः– यह बातें मिनजुम्ला (तमाम) ग़ैब की ख़बरों की हैं कि हम भेजते हैं तेरी तरफ़।[35]
2ः– यह ख़बरें हैं ग़ैब की कि हम भेजते हैं तेरे पास।[36]

3:– और यह ग़ैब की बात बताने में बख़ील नहीं।[37]

(2) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ''इ़ल्मे ग़ैब' को दूसरी जिहत से देखा जाए तो यह आयात हमारी आंखें खोलने के लिए काफ़ी हैं :

1:– हमने आप पर कुरआन उतारा है जो कि तमाम बातों का बयान करने वाला है।[38]

2:– यह कुरआन कुछ बनाई बात नहीं लेकिन मुवाफ़िक़ (तरह़) है उस कलाम के जो इससे पहले है और बयान हर चीज़ का।[39]

3:– हमने इस किताब में कुछ उठा न रखा।[40]

4:– बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आया और रौशन किताब।[41]

5:– और कोई चीज़ नहीं जो ग़ाएब हो आसमान और ज़मीन में मगर मौजूद है खुली किताब में।[42]

6:– और कोई दाना ज़मीन के अँधेरों और न कोई हरी चीज़ और न कोई सूखी चीज़ मगर वह सब किताबें मुबीन (खुली किताब) में है।[43] आपने मुलाह़ज़ा फ़रमाया, इन आयात में पहले ''किताबे मुबीन'' कुरआने ह़कीम का ज़िक्र फ़रमाया फिर यह फ़रमाया कि इस रौशन किताब में क्या कुछ है ———— ग़ौर फ़रमाएँ, यह रौशन किताब जिसमें ज़मीनो आसमान की हर शै (चीज़) का बयान है जिस ज़ाते कुदसी पर उतरी उनके इ़ल्म और दानिश (अ़क़्ल) का क्या आ़लम होगा!

(3) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ''इ़ल्मे ग़ैब'' को तीसरी जिहत से देखा जाए तो यह आयाते करीमा हमको एक नए जहाँ में ले जाती हैं। जहाँ हम हैरत से एक दूसरे का मुँह तकते हैं मगर जो कुछ कहा गया उस पर हम दिलो जान से ईमान लाते हैं कि अगर ईमान न लाएँ तो कहीं के न रहें, इन आयात पर खूब ग़ौर फ़रमाइयें और इ़ल्में मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वुसअतो पिनहाई (फैलाव और पोशीदगी) का अन्दाज़ा लगाएँ, अल्लाहु अकबर! हम क्या अन्दाज़ा लगा सकते हैं उनका रबबे करीम ही जाने कि उसने अपने ह़बीबे करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को किस क़द्र ''इ़ल्मे ग़ैब'' अ़ता फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है 1:– हमने आपको गवाही देने वाला और बशारत देने वाला और

डराने वाला करके भेजा है।[44]
2:– और आपको उन लोगों पर गवाही देने के लिये ह़ाज़िर लाएँगे।[45]
3:– बेशक हमने तुम्हारे पास एक रसूल भेजा है जो तुम पर गवाही देगा।[46]
4:– और जिस दिन हम हर हर उम्म्त से एक एक गवाह जो उन्हीं में से होगा उनके मुक़ाबले में क़ाएम करेंगे और उन लोगों के मुक़ाबले में आपको गवाह बनाकर लाएँगे।[47]

इन आयाते करीमा से मालूम हुआ कि क़यामत के दिन हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम न सिर्फ़ अपनी उम्मत बल्कि दूसरे अम्बिया की उम्मतों के आमाल की भी गवाही देंगे और गवाही वही देता है जिसके सामने कोई काम या कोई बात हुई हो ––––– इन आयात से यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सब कुछ मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं, वह हमारे अह़वालो आ़माल से बे ख़बर नहीं ––––– इस पस मन्जर में यह अह़ादीसे़ करीमा मुलाह़ज़ा फ़रमाएँ :
1:– एक ह़दीसे़ पाक में फ़रमाया : जिस तरह़ मैं आगे देखता हूँ, उसी तरह़ पीछे भी देखता हूँ।[48]
2:– दूसरी ह़दीसों में आता है कि मदीना मुनव्वरा से मक्का मुअ़ज़्ज़मा जाते हुए अरज़क़ की वादी में ह़ज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को बुलन्द आवाज़ से तल्बिया (लब्बैक अल्लाहुमा लब्बैक) पढ़ते हुए देखा फिर हुर्शा की वादी में ह़ज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम को ऊनी जुब्बा पहने सुर्ख़ ऊँटनी पर सवार देखा।[49]
3:– तीसरी ह़दीस़ पाक से मालूम होता है कि आप जन्नत और दोज़ख़ मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं।[50] –
4:– चौथी ह़दीसे़ पाक से मालूम होता है कि आप जन्नत और दोज़ख़ में जाने वाले हर फ़र्द को नाम बनाम जानते हैं।[51]
5:– पाँचवी ह़दीसे़ पाक से मालूम होता है कि जब एक शख़्स ने मह़फ़िले पाक में यह दर्याफ़्त किया कि वह जन्नत में जाएगा या दोज़ख़ में तो आपने बर्मला इरशाद फ़रमाया तू दोजख़ में जाएगा।[52]
6:– छठी ह़दीसे़ पाक में फ़रमाया मेरी सारी उम्म्त अपने सब आमाले नेको

बद के साथ मेरे हुज़ूर (सामने) पेश की गई।[53]
7:– सातवीं ह़दीसे़ पाक में फ़रमाया रात मेरी सब उम्मत मेरे इस हुजरे के पास पेश की गई यहाँ तक कि बेशक उनके हर शख़्स को इससे ज़्यादा पहचानता हूँ जैसा तुम में कोई अपने साथी को पहचाने।[54]

कुरआने करीम में एक जगह इरशाद हुआ ––––– क्या उस शख़्स के पास इ़ल्मे ग़ैब है कि उसको देख रहा है?[55] ––––– इस आयत से अन्दाज़ा होता है कि ''इ़ल्मे ग़ैब'' उसी के पास होता है जो देख भी रहा हो ––––– कुरआने करीम में मुतअ़द्दिद मक़ामात (कई जगहों) में हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शाने दीद (देखने की शान) को बयान किया गया है[56] ––––– सच्ची बात यह है कि जिसने अल्लाह को देख लिया, उसके आगे कोई चीज़ छुपी न रही सब ज़ाहिर हो गई हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ुद फ़रमा रहे हैं : मैंने अपने रब अ़ज़्ज़ व जल्ल को देखा, उसने अपना दस्ते कुदरत मेरी पुश्त (पीठ) पर रखा मेरे सीने में उसकी ठण्डक मह़सूस हुई, उसी वक़्त हर चीज़ मुझ पर रौशन हो गई और मैंने सब कुछ पहचान लिया।[57]

अब तक तो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इ़ल्म की वुसअ़तों (फैलाव) और आपके देखने की बातें हो रही थीं ––––– लेकिन जो ''इ़ल्मे ग़ैब'' आपको अ़ता किया गया और जो कुछ आपको दिखाया गया क्या उस नेमते उ़ज़्मा (अ़ज़ीम नेमत) की ख़ैरात अपने गुलामों को भी आपने तक़सीम फ़रमाई?––––– बहुत सी अ़हादीस़ से पता चलता है कि आपने अ़ता फ़रमाया और ख़ूब अ़ता फ़रमाया, और क्यों अ़ता न फ़रमाते, जबकि अल्लाह तआ़ला ने आपको अ़ता फ़रमाने ही के लिये भेजा है ––– मशहूर व मह़बूब सहाबी ह़ज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी रदियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं :
1:– नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें इस ह़ाल पर छोड़ा कि हवा में कोई परिन्दा पर मारने वाला ऐसा नहीं जिसका इ़ल्म हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमारे सामने बयान न फ़रमा दिया

हो।[58]
हज़रते हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं –

2:– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार हम में खड़े होकर अब से क़ियामत तक जो कुछ होने वाला था सब बयान फ़रमा दिया, कोई चीज़ न छोड़ी जिसे याद रहा, याद रहा जो भूल गया, भूल गया।[59] ––––
3:– एक हदीस में आता है कि –
नहीं छोड़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी फ़ितना चलाने वाले को दुनिया के ख़त्म होने तक मगर हमको उसका नाम, उसके बाप का नाम और उसके क़बीले का नाम बता दिया।[60]
4:– 17 रमज़ानुल मुबारक 2 हिजरी 624 ई0 में गज़व–ए–बद्र पेश आया, जिहाद शुरू होने से क़ब्ल मैदाने जिहाद में अपना दस्ते मुबारक रख कर दुश्मनाने इस्लाम के मक़तूलीन (क़त्ल किये जाने वालों) की निशानदही फ़रमाई कि फ़लाँ शख़्स इस जगह क़त्ल किया जाएगा –––– जब जिहाद ख़त्म हुआ तो जिस शख़्स के लिये अपने दस्ते मुबारक से जिस जगह की निशानदही फ़रमाई थी वह वहीं पड़ा हुआ मिला –––– एक इन्च आगे न पीछे।[61] ––––

बुख़ारी शरीफ़ में एक तवील (लम्बी) हदीस आती है जो हमारी आँख खोलने के लिये काफ़ी है –––– हज़रत अनस बिन मलिक रदियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :–

5:– सूरज ढ़लने के बाद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए, फिर हमें ज़ोहर की नमाज़ पढ़ाई, जब सलाम फेर दिया तो आप मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हुए और क़ियामत का ज़िक्र फ़रमाया, नीज़ (साथ ही) उन बड़े उमूर (मामलात) का जो उससे पहले है –––– फिर फ़रमाया ''अगर कोई मुझसे किसी चीज़ के बारे में पूछना चाहता है तो पूछ ले क्योंकि ख़ुदा की क़सम तुम मुझसे किसी चीज़ के बारे में न पूछोगे मगर मैं तुम्हैं उसके मुतअल्लिक़ बता दूँगा, जब तक कि मैं इस जगह हूँ'' ––––

हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हु का बयान है कि लोग ज़ारो कतार रोने लगे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बार बार फ़रमाते रहे कि ''मुझसे पूछ लो!''–––– ''मुझसे पूछ लो!'' [62]

इस हदीसे पाक पर यह आयते करीमा गवाह है :– और यह ग़ैब की बात बताने में बख़ील नहीं [63] यानी जो पूछोगे, बताया जाएगा –––– जो माँगोगे, दिया जाएगे –––– हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़सम खाकर यह फ़रमाना कि जो पूछोगे बताया जाएगा –––– और फिर बार–बार फ़रमाना कि मुझसे पूछ लो, मुझसे पूछ लो!'' इस हक़ीक़त पर गवाह है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह के फ़ज़लो करम से ''ग़ैब'' हासिल था ––– एक अरब आलिम शैख़ अहमद बिन मुहम्मद बिन सिद्दीक़ ग़मारी हसनी ने एक फ़ाज़िलाना किताब लिखी है जिसका उनवान है **''مطابقة الاختر اعات العصریه لما اخبر به سیّد البریه''** [64] –––– मुसन्निफ (लेखक) ने इस किताब में उन ग़ैबी ख़बरों को जमा किया है जो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाई हैं। पढ़ पढ़ कर हैरत बढ़ती जाती है और यूँ मालूम होता है कि माज़ी (भूतकाल/Past) और मुसतक़बिल (भविश्य काल/Future) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने आईना थे –––– और क्यों न हों कि सरकार ख़ुद फ़रमा रहे हैं :– मेरे पास ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियाँ लाई गईं और मेरे हाथ पर रख दी गईं [65]

ख़ज़ाने का मालिक वही होता है जिसके पास कुन्जियाँ होती हैं लेकिन इसका हरगिज़ येह मतलब नहीं कि मआज़ल्लाह, अल्लाह तआला बेइख़्तियार हो गया बल्कि इससे तो अल्लाह तआला का इख़्तियार और कुदरत और ज़ाहिर होती है –––– अल्लाह तआला ने अपने करम से अपने हबीबे करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कितना नवाज़ा है। यही वह कुन्जियाँ हैं जिनसे आयाते कुरआनी के मआनी (मतलब) के ख़ज़ाने खोले जाते हैं –––– कुरआन को हम भी देखते हैं, हम भी पढ़ते हैं मगर आयाते कुरआनी में निगाहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो कुछ देखती है

हम नहीं देख सकते ———— सिर्फ़ एक मिसा़ल पेश करता हूँ ———— क़ुरआने करीम में एक आयत है :—
और उनके लिये तैयार रखो जो ''कु़व्व्त'' तुमसे बन पड़े, [65] (यानी दुश्मनाने इस्लाम के लिये)

यहाँ लफ़्ज़ ''कु़व्वत'' के माना (मतलब) में बज़ाहिर कोई राज़ नहीं मालूम होता लेकिन जब उस राज़ से हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर्दा उठाते हैं तो इन्सानी अ़क़्ल हैरान हो जाती है — ल़फ़्ज़ ''कु़व्वत'' की तफ़सीर करते हुए आपने फ़रमाया :— ख़बरदार, येह कु़व्वत ''रमी'' है! ———— ख़बरदार! यह कु़व्वत ''रमी'' है! [66] ———— ख़बरदार! येह कु़व्वत ''रमी'' है ————

अ़रबी में रमी के माना (मतलब) ''फेंकना'' आते हैं चुनान्चे ह़ज़ में जमरात पर जो कंकरियाँ फेंकी जाती हैं उसको रमी कहते हैं ——— इस ह़दी़से पाक में हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन तमाम हथियारों का ज़िक्र फ़रमाया जो आज हमारे सामने हैं और कु़व्व्त का तवाज़ुन (वज़न) उस मुल्क के ह़क़ में है जिसके पास येह हथियार है। खुसूसन ख़तरनाक एटम बम, राकेट, मिज़ाइल वग़ैरा ———— यह सब हथियार फेंके जाते हैं और ''कु़व्वत'' का राज़ बने हुए हैं ———— अह़ादी़स का मुतालआ़ (अध्ययन/ Study) करें तो आपको ग़ैबी ख़बरों का एक सैलाब उमँडता हुआ नज़र आएगा।

और जो कुछ अ़र्ज़ किया गया , उसकी रोशनी में हमें ''इ़ल्मे ग़ैब'' के बारे में इन ''ह़क़ाइक़'' (ह़क़ीक़तों) का इ़ल्म होता है, इन ह़क़ाइक़ को अच्छी तरह ज़ेहन नशीन कर लेना चाहिये :—

1:— पहली बात येह मालूम होती है कि ''इ़ल्मे ग़ैब'' एक ह़क़ीक़त है।
2:— दूसरी बात येह मालूम होती है कि ''इ़ल्मे ग़ैब'' अल्लाह ही के लिये है।
3:— तीसरी बात येह मालूम होती है कि अल्लाह त़आला अपने मह़बूब को

इल्मे ग़ैब अ़ता फ़रमाता है।

4:– चौथी बात यह मालूम होती है कि अ़ल्लाह त़आला ने अपने बर्गज़ीदा अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को ''इल्मे ग़ैब'' अ़ता फ़रमाया है।

5:– पाँचवी बात यह मालूम होती है कि अल्लाह त़आ़ला ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ''इल्मे ग़ैब'' अ़ता फ़रमाता है।

6:– छठी बात यह मालूम होती है कि हुज़ूरे अनवर सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ''इल्मे ग़ैब'' सहा़बा किराम रदियल्लाहु अ़न्हुम को बताया है और उन्होंने हमको बताया।

इस वक़्त दुनिया–ए–इस्लाम आ़लमी साज़िश की ज़द (लपेट) में है। दुश्मनाने इस्लाम का हदफ़ (निशाना) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ाते अक़्दस है, यही वह मरकज़े क़ल्बो नज़र (दिलो निगाह का सेन्टर) है जिससे जि़न्दगी मिलती है। इस साज़िश के तह़त मुसलमानाने आ़लम को हर उस सोच और हर उस अ़मल से रोका जा रहा है जिससे दिलो दिमाग़ में हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुह़ब्बत और अ़ज़्मत का नक़्श बैठता चला जाए – इस साज़िश से आप खुद को मह़फ़ूज़ रखें और येह यक़ीन रखें कि अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्लो करम से हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सब कुछ अ़ता फ़रमाया है।

–: हवाला :–

1– सूरे अ़लक़ आयत नं0 4–5

2– सूरे ताहा आयत नं0 114

3– इब्नो अ़ब्दुल बर्र जामेउ़ बयानिल इ़ल्मि व फज़लेही पेज नं0 47

4– इब्नो अ़ब्दुल बर्र जामेउ़ बयानिल इ़ल्मि व फज़लेही पेज नं0 49

5– इब्नो अ़ब्दुल बर्र जामेउ़ बयानिल इ़ल्मि व फज़लेही पेज नं0 46

6– सूरे बक़रा आयत नं0 247

7– सूरे बक़रा आयत नं0 31

8– सूरे कहफ़ आयत नं0 65

9– सूरे बक़रा आयत नं0 3

10– सूरे अनआम आयत नं0 59

11– सूरे बक़रा आयत नं0 33

12– सूरे यूनुस आयत नं0 20

13– सूरे इनाम आयत नं0 5, सूरे हूद आयत नं0 31

14– सूरे जिन आयत नं0 26

15– सूरे आ़ले इमरान आयत नं0 179

16– सूरे बक़रा आयत नं0 31

17– सूरे बक़रा आयत नं0 251

18– सूरे नमल आयत नं0 16

19– सूरे अम्बिया आयत नं0 74

20– सूरे यूसुफ़ आयत नं0 68

21– सूरे यूसुफ़ आयत नं0 96

22– सूरे यूसुफ़ आयत नं0 22

23– सूरे क़िसस आयत नं0 14

24– सूरे कहफ़ आयत नं0 65

25– सूरे आले इ़मरान आयत नं0 49

26– सूरे यूसुफ़ आयत नं0 37

27– सूरे जिन आयत नं0 26

28– सूरे बक़रा आयत नं0 253

29– सूरे कहफ़ आयत नं0 70

30– सूरे कहफ़ आयत नं0 65–82

31– सूरे निसा आयत नं0 113

32– सूरे आ़ला आयत नं0 6

33– सूरे शुरा आयत नं0 52

34– सूरे नूर आयत नं0 63

35– सूरे हूद आयत नं0 49

36– सूरे यूसुफ़ आयत नं0 102

37– सूरे तकवीर आयत नं0 24

38– सूरे नह़ल आयत नं0 89

39– सूरे यूसुफ़ आयत नं0 111

40– सूरे अनआम आयत नं0 38

41– सूरे माइदा आयत नं0 15

42– सूरे नमल आयत नं0 75

43– सूरे इनाम आयत नं0 59

44– सूरे फतह आयत नं0 8

45– सूरे निसा आयत नं0 41

46– सूरे मुज़्ज़म्मिल आयत नं0 15

47– सूरे नह़ल आयत नं0 89

48– मुस्लिम शरीफ़ ह़िस्सा 2 पेज नं0 116

49– इब्ने माजा पेज नं0 20, 208

50– मुस्लिम शरीफ़ ह़िस्सा 2 पेज नं0 180

51– मिश्कात शरीफ़ किताबुल ईमान फ़िल क़द्र पेज नं0 19

52– बुख़ारी शरीफ़ ह़िस्सा 3 पेज नं0 855

53– मुस्लिम शरीफ़ ह़िस्सा 1 पेज नं0 207 (ब) अम्बाउल मुस्तफ़ा पेज नं0 9

54– इम्बाउल मुस्तफ़ा पेज नं0 9 बह़वला तिबरानी

55– सूरे नज्म आयत नं0 35

56– सूरे मुजादला आयत नं0 7, सूरे इब्राहिम आयत नं0 19, सूरे बक़रा आयत नं0243, 258

57– तिर्मिजी शरीफ़ बरिवायत मोआज़ बिन जबल (ब) मिशकात शरीफ़, कराची पेज नं0 72

58– अम्बाउल मुस्तफ़ा पेज नं0 8 बह़वाला मुसनदे अह़मद

59– इम्बाउल मुस्तफ़ा पेज नं0 7 बह़वाला बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़

60– मिशकात शरीफ़ बाबुल फ़ितन

61– मुस्लिम शरीफ़ ह़िस्सा 2 किताबुल जिहाद

62– बुख़ारी शरीफ़ ह़िस्सा 3 पेज नं0 855

63– सूरे तकवीर आयत नं0 24

64– मुफ़्ती अह़मद मियाँ बरकाती ने इसका तर्जमा किया है

65– बुख़ारी शरीफ़ पेज नं0 848, मुस्लिम शरीफ़ ह़िस्सा 2 पेज नं0 116

66– सूरे अनफ़ाल आयत नं0 60

67– मुस्लिम शरीफ़ ह़िस्सा 2 पेज नं0 143

بسم اللّٰہ الرحمن الرحیم

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ۔

ग़ैब की बातें

इन्सान जितना बुलन्द होता है, नज़र उतनी ही वसीअ़ होती (फैलती) चली जाती है ----- फ़ज़ाओं में सफ़र करने वालों पर येह राज़ खुल चुका है ----- चाँद पर क़दम रखने वालों ने इस दुनिया को एक तबाक़ की शक्ल में मुशाहदा किया ----- और मुह़म्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एक सच्चे आशिक ने सदियों पहले कायनात को राई के दाने की तरह़ मुलाह़ज़ा फ़रमाया -----

نظرت الی بلاد اللہ جمعا

کخردلۃ علی حکم اتصال

(तर्जमा :– मैंने अल्लाह के तमाम शहरों को इस तरह देखा जैसे हथेली पर राई का दाना : हुज़ूर ग़ौसे आ़ज़म)

तो फिर उसकी बुलन्दी का क्या आ़लम होगा जिसको खुद नज़र देने वाला बुलन्द करे –– وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ۔ [1] -----

तर्जमा :– और हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया। ज़िक्र जभी बुलन्द होता है जब इन्सान खुद बुलन्द होता है और जब खुद बुलन्द न हो बल्कि बुलन्द किया जाए तो फिर क्यूँ न ज़मीनो आसमान की हर शै (चीज़) और हर ह़ादस़ा उसकी निगाहों के सामने नगीने की तरह़ चमकने लगे?----- जिस तरह़ घरों में बैठने वाले फ़ज़ाई मुसाफ़िरों तक नहीं पहुँच सकते और जिस तरह़ जाहिल और अनपढ़ पढ़े – लिखों की आँख नहीं पा सकते ----- उसी तरह़ पढ़े – लिखे उनकी निगाह नहीं पा सकते जो फ़ैज़े बारी (अल्लाह के फ़ैज़) से बराहे रास्त़ (डारेक्ट) मुस्तफ़ीज़ (फ़ैज़याब) हो रहे हैं ----- मगर अफ़सोस मह़रूम, उल्टी सीधी दलीलों से अपनी मह़रूमी का ह़ाल छुपाते हैं और इस तरह़ अपने क़ल्ब (दिल) और नज़र को भी रूसवा करते हैं ––

ज़रा ग़ौर तो कीजिये एक आ़म सियासत दाँ (जानने वाला) और सर्बराहे मुल्क की क़द्रो मन्ज़िलत उस इल्मीयत और बसीरत की वज़ह से होती है जो वो आ़लमी ह़ालात और तारीख़ी (ऐतिहासिक) ह़ादस़ात की रोशनी में ह़ासिल करता है और जिसके तुफ़ैल वो अपने ज़माने से 40–50 बरस आगे देखने लगता है और अक्स़र ऐसे साह़िबे बसीरत का कहा सच स़ाबित हुआ है ––––– लेकिन जिस इन्सान ने ज़ाहिर में आ़लमी ह़ालात और तारीख़ी ह़वादिस़ (ऐतिहासिक ह़ादस़ात) का मुतालआ़ (अध्ययन/study) न किया हो। दूर–दराज़ के सफ़र भी न किये हों। दुनिया के अमीरों और बादशाहों से भी न मिला हो ––––– किसी इन्सान से पढ़ा भी न हो ––––– फिर उसको रहबरे आ़लम (दुनिया का रहबर) बना कर पेश किया जाए और साथ ही यह भी कहा जाए कि येह कुछ नहीं जानता ––––– इसको ज़रा बसीरत नहीं है यह ''लकीर का फ़क़ीर'' है, मआ़ज़ल्लाह ––––– तो बताइये उसकी तरफ़ कौन मुतवज्जे होगा और कैसे अपना रहबर और पेशवा तसलीम करेगा? – हाँ जब आप यह कहेंगे कि बेशक उसने तारीख़े आ़लम (दुनिया के इतिहास) का मुतालआ़ (अध्ययन) नहीं किया ––––– उसने दुनिया नहीं देखी ––––– किसी इन्सान ने उसको पढ़ाया भी नहीं ––––– लेकिन वो कुछ बता रहा है जो किसी दूसरे ने नहीं बताया ––––– वो कुछ दिखा रहा है जो किसी दूसरे ने न दिखाया ––––– वो कुछ सुना रहा है जो किसी दूसरे ने न सुनाया ––––– बिला शुबहा अब लोग उसकी तरफ़ दौड़ पड़ेंगे उसको अपना रहबर और पेशवा तसलीम करेंगे ––––

तो आइये, देखिये ख़ालिके आ़लम उस रहबरे आ़लम के बारे में क्या कह रहा है? وَيُعَلِّمُكُم مَّالَمْ تَكُونُوا تَعلَمُونَ- [2] ––––– ऐ दुनिया वालो! हमारा मह़बूब तुमको वह कुछ बता रहा है कि इससे पहले तुम्हें उसकी ख़बर न थी ––––– एक जगह यूँ फ़रमाता है عَلَّمَ بِالْقَلَمِ عَلَّمَ الإِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَمْ- [3] क़लम से सिखाया, इन्सान को सिखाया, वह कुछ सिखाया कि न जानता था ––––– अब ज़रा इक़बाल के इस शेर को पढ़िये जो नया शबाब (जोश) लेकर सामने आ रहा है :–

लौह़ भी तू, क़लम भी तू, तेरा वुजूद अल – किताब
गुम्बद आबगीन – ए – रंग तेरे वुजूद में ह़ोबाब

कुछ उमूरे ग़ैबिया (ग़ैबी बातों) की इत्तिला दी जाती है और किस शान से ––––– مَاكَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ۔[4] और अल्लाह की यह शान नहीं कि आ़म लोगों! तुम्हें इ़ल्मे ग़ैब दे दे, हाँ अल्लाह चुन लेता है अपने रसूलों से जिसे चाहे ––––– और कुछ उमूरे ग़ैबिया (ग़ैबी मामलत) से खुद पर्दे उठाए जाते हैं ––––– عَالِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ۔[5] ग़ैब जानने वाला हैं, अपना राज़ किसी पर नहीं खोलता मगर रसूलों में से जिस पर चाहे खोल देता है ––––– ज़रा ग़ौर तो कीजिये जब वह पर्दादार खुद नक़ाख उलट दे तो हुस्ने आ़लम सोज़ का क्या आ़लम होगा! ––––– अल्लाह अल्लाह ––––– تِلْكَ مِنْ اَنْبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَا اِلَيْكَ۔[6]

यह ग़ैब की ख़बरें हैं (बस ऐ ह़बीब) तुम्हीं को बतलाते हैं ––––– अल्लाहु अकबर ––––– दामन भर दिया ––––– क़ासिम (बाँटने वाला) बना दिया ––––– और ऐलान फ़रमाया وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ۔[7] यह दिल खोल कर ग़ैब की ख़बरें बताते हैं'' दिल तंग नहीं पूछ लो जिसको जो पूछना है!

हाँ बख़ील (कंजूस) वही होता है जो होते हुए भी ख़र्च नहीं करता ––––– उसको कौन बख़ील कहता है जिसके पास दमड़ी भी न हो?––––– आयत के तेवर बता रहे हैं कि सलाए आ़म है, देने वाला सख़ी है, उसके फ़रक़े अक़दस (सरे मुबारक) पर ताजे (जो कुछ हुआ और जो कुछ होगा सबके इ़ल्म का ताज) रख दिया गया है। उसको ग़नी बना दिया गया है। देखिए आयते शरीफ़ा وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَاَغْنٰى۔[8] तुम्हें हाजतमन्द पाया फिर ग़नी कर दिया। एक माना (मतलब) और मफ़हूम के साथ अपने रूख़ से घूँघट उठा रही है ––––– उसने तो बुख़्ल (कमी) न किया ––––– मह़रूमों ने लेने में बुख़्ल किया ––––– अपना दामन खींच लिया –––––एक शोर मचाया और ज़मीन सर पर उठाई ––––– ''ग़नी (अमीर) के पास तो कुछ भी नहीं'' ––––– ''गनी

के पास तो कुछ भी नहीं'' ———— जुनूने दीवानगी ने यहाँ तक रसाई (पहुँच) की कि तारे दामन भी बाक़ी न रहा ———— लें तो किस तरह़ लें?———— अल्लाह अल्लाह मह़रूमी सी मह़रूमी है! ———— और यह दीवानगी अब तक न गई और येह मह़रूमी का दाग़ अब तक न धोया ———— बेतुकी जुरअत तो देखिये कि आ़लमी सतह़ (World level) पर वह गुल खिलाया कि अ़क़्ल दँग है ग़ालिबन 04 अप्रैल 1976 ई0 को इस्लामी आ़लमी मेला में रॉयल अल्बर्ट हॉल लंदन में एक मीटिंग की मजलिस में पाकिस्तान के एक मशहूर आ़लिम का मक़ाला (Article) पढ़ा गया ——— सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिये उस मक़ाले में कहा गया ''नही व ना मालूम इ़ल्म का दावा रखते थे'' (रोज़नामा जंग, कराची, शुमारा 7 अप्रैल 1976 ई0)

जब कुरआन कहता है कि हमने '' ना मालूम'' इ़ल्म दिया तो झुठलाने वाले क्यों झुठलाएँ? ———— देखो याकूब अ़लैहिस्सलाम क्या फ़रमा रहे हैं —————وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰہِ مَالَا تَعْلَمُوْنَ۔ [9] मुझे अल्लाह की तरफ़ से वह कुछ मालूम है जो तुम नहीं जानते ———— और खुद अल्लाह गवाही दे रहा है और जो कुछ कहा गया उसकी तसदीक़ फ़रमा रहा है ———— وَاِنَّہٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰہُ وَلٰکِنَّ اَکْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ۔ [10] ''बेशक वह हमारे सिखाए से साह़िबे इ़ल्म है मगर अक्स़र लोग नहीं जानते''

अल्लाहु अकबर वह आ़लिमुल ग़ैब बेख़बरों का ह़ाल भी खुद बयान फ़रमा रहा है ———— हाँ यैह वह ''ना मालूम'' इ़ल्म है जिसको सामने लाया गया तो हज़ारों और लाखों गरवीदा व वारफ़्ता (आ़शिक़) हो गए ———— और यही वह ना—मालूम इ़ल्म है जिसको आज भी सामने लाया जाए तो हज़ारों लाखों मुशर्रफ़ ब—इस्लाम हो सकते हैं ———— रसूले करीम अ़लैहित्तह़ीयतो वत्तसलीम को आ़म इन्सान के रूप में पेश करना पहले इतना ख़तरनाक न था जितना आज ख़तरनाक है ———— देखिये उसके रसूल खुद कह रहे हैं —

اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ وَلٰکِنَّ اللّٰہَ یَمُنُّ عَلٰی مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِہٖ۔

[11] हम हैं तो ज़ाहिर में तुम्हारी तरह़ इन्सान, मगर अल्लाह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है एह़सान फ़रमाता है ––––– तो भला मह़बूब और मरदूद यकसाँ (एक जैसे) कैसे हो सकते हैं? हीरा और पत्थर फ़ितरतन एक होते हुए भी एक नहीं ––––– येह तो बर्गज़ीदगाने इलाही (खुदा के बर्गज़ीदा बन्दे) हैं .... इनका तो पूछना ही क्या! लेकिन फिर भी तुम यह कहते हो कि वह आ़म इन्सान था और वह ''न–मालूम'' इ़ल्म न रखता था तो जो कुछ हम सुन रहे हैं ––––– फिर यह क्या है?देखिये किस शान और यक़ीन के साथ एलान फ़रमा रहा है। ''क़ियामत क़ाएम होने से क़ब्ल उन उमूरे ग़ैबिया (ग़ैबी बातों) को देख लोगे जो कभी ना देखे और न सोचे''[12] यही नहीं बल्कि मुस्तक़बिल (भविश्य/Future) में पेश आने वाले उन उमूरे ग़ैबिया (ग़ैबी मामलात) को एक एक करके बयान फ़रमा रहा है ––––– तो ज़रा बताओ तो सही कि इन बातों की ख़बरें देने वाला किस जहान से ख़बरें ला रहा है?––––– और किस जहान की ख़बर दे रहा है – एक ख़बर नहीं ––––– और एक तरह़ की ख़बरें नहीं ––––– तरह़ तरह़ की ख़बरें ––––– मज़हबी व अख़लाक़ी ––––– तालीमी व तदरीसी (पढ़ाने वाली) ––––– तहज़ीबी व मुआ़शरती (समाजी) – साइंसी व तकनीकी ––––– तिजारती व इक़्तिसादी (Economical) मादनियाती (वह चीज़े जो ज़मीन से निकलती हैं उनके मुतअ़ल्लिक़ जैसे पेट्रोल, कोयला वग़ैरा) ज़राअ़ती (खेती के मुतअ़ल्लिक़) ––– सियासी और मुल्की ––––– तिब्बी व मुआ़लजाती (डाक्टर और इ़लाज के मुतअ़ल्लिक़) ––––– ख़बरें ही ख़बरें ––––– आइये ज़रा इस ग़ैबी ख़बरनामा को एक नज़र मुलाहज़ा कीजिये। फिर बताइये कि यह ख़बरें देने वाला ''ना–मालूम'' का इ़ल्म रखता है या नहीं?–––––

قَدْجَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ عَمِیَ فَعَلَيْهَا وَمَا اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ۔

[13] तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास आँखें खोलने वाली दलीलें आ गईं तो जिसने देखा अपने भले को और जो अन्धा हुआ अपने बुरे को और मैं तुम पर निगेहबान नहीं। आइये अब ''ग़ैब की बातें'' सुनें जो उस ग़ैब की ख़बरें बताने वाले आक़ा व मौला सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बताई है और जिनकी तफ़सीलात अहादीस़ में मौजूद हैं।

मज़हबी ख़बरें :–

1) मसाजिद (मस्जिदों) को रास्ता बना लिया जाएगा।
2) क़ारियों की कस़रत होगी, ह़शरातुल अर्द (ज़मीनी कीड़े मकोड़े) की तरह़ पाये जाएँगे।
3) ओ़लमा और फ़ोक़हा की कि़ल्लत होगी।
4) शरीर (बदमाश) फ़ोकहा पाये जाएँगे।
5) मुत्तक़ी (परहेज़गार) मुफ़्ती ऐसा अ़नक़ा (एक फ़र्ज़ी परिन्दा का नाम) हो जाएगा कि मोटा ताज़ा इन्सान ढूँढते–ढूँढते दुबला हो जाएगा, मगर फिर भी न पाएगा।
6) हज़ारों नमाज़ पढ़ेंगे मगर एक भी मुसलमान न होगा।
7) कुरआने करीम को आ़र (बुरा) समझा जाएगा।
8) इस्लाम के काम ऐसे लोग करेंगे जो खुद मुसलमान न होंगे (चुनान्चे हम देख रहे हैं कि मग़रिबी क़ौम कुरआनो ह़दीस़, तारीख़ (इतिहास) व सियर (सीरत) वग़ैरा पर बहुत मुफ़ीद काम कर रही हैं और ऐसे लोग दीन के काम कर रहे हैं जो ज़ाहिर में बेदीन मालूम होते हैं)।

अख़लाक़ी ख़बरें :–

1) सिर्फ़ जान पहचान वाले से अलेक सलेक (सलाम दुआ) होगी।
2) बेह़याई, बदज़ुबानी आम होगी।
3) बुरे हमसाया (साथी) होंगें।
4) रिश्तेदारियाँ ख़त्म हो जाएँगी।
5) औ़रतें बाग़ी हो जायेंगी और मर्द नेकी का रास्ता छोड़ देंगे।
6) छोटों की खूब देखभाल होगी और बुज़ुर्गों को नज़र अन्दाज़ कर दिया जाएगा (तरक़्क़ी याफ़्ता मुल्कों में बूढ़े वालिदैन को घर से निकाल दिया जाता है, हुकूमत उनकी ख़बरगीरी करती है, उनकी अपनी औलाद पूछती तक नहीं)।
7) ज़िनाकारी से शर्म न रहेगी (तरक़्क़ी याफ़्ता मुल्कों मे यह आ़म है, सब के

सामने कोई ह़या नहीं)।
8) औबाश लोग चलती औ़रत से छेड़ छाड़ करेंगे, छेड़ने वाला हँसेगा तो उसके साथ उसके सारे साथी हँसेंगे (बड़े शहरों में यह वबा आ़म है आज़ हम खुद देख रहे हैं)।
9) औ़रतें बुज़ुर्गों और बूढ़ों को झिड़केंगी। मग़रिबो मशरिक़ (पूरब पश्चिम) में यह वबा आ़म है।
10) सच्चा दोस्त और माले ह़लाल अ़नक़ा हो जाएगा।

तालीमी और तदरीसी ख़बरें :–

1) इ़ल्म आ़म होगा। मर्द, औ़रत, बच्चा, ग़ुलाम, आज़ाद सब पढ़ेंगे।

तहज़ीबी और मुआ़शरती (समाजी) ख़बरें :–

1) औ़रतें मलबूस (कपड़ा पहनी हुई) होकर भी उ़र्यां (नंगी) होंगी।
2) सरों पर कोहान नुमा शै (यानी हैट या उस क़िस्म की टोपी) होगी।
3) औ़रतें इतरा कर चलेंगी।
4) मर्द औ़रतों से मुशाबहत (मेल) पैदा करेंगे और औ़रत मर्दों से।
5) सरों पर गाने बज रहे होंगे।
6) लोग बाज़ारों में इस तरह़ चलेंगे कि रानें नज़र आएँगी (यानी औ़रतें स्कर्ट पहनेंगी और मर्द तंग वग़ैरा)।
7) दाढ़ियाँ साफ़ की जाएँगी।
8) ख़ूबसूरत चमड़े के जूते पहनेंगे और उन्हें ख़ूब चमकाएँगे।
9) मर्द ज़ीनत करेंगे।
10) तरह़ तरह़ के खाने खाएँगे, क़िस्म क़िस्म के शर्बत पियेंगे, वज़अ़ वज़अ़ (रंग रंग) के कपड़े पहनेंगे और चिकनी चुपड़ी बातें करेंगे –––– यह उम्मत के शरीर (शरारत पसन्द) लोग होंगे। (अल्लाहु अकबर! जिनको हम शरीफ़ और तरक़्क़ी याफ़्ता समझते हैं वही शरीर निकले)

साइन्सी और तकनीकी ख़बरें :–

1) कुजादों की मानिन्द सवारियाँ होंगी (यानी मोटरें, बसें वग़ैरा)।
2) ज़माना एक दूसरे के क़रीब हो जाएगा और ज़मीन सिकुड़ जाएगी (यानी नए क़िस्म के ज़राए इबलाग़ जैसे – तार, टेलीफोन, फ़ैक्स, इण्टरनेट वग़ैरा और ज़राए ह़मलो नक़्ल (लादने ले जाने के ज़रिये) जैसे – मोटर, रेल, जहाज़ वग़ैरा ईजाद (पैदा) होंगे, जिनकी वजह से मकान और ज़मान के फ़ासले कम हो जाएँगे)
3) साल महीना हो जाएगा, महीना जुमा, जुमा एक दिन और दिन एक साअ़त घन्टा दो घन्टा ।
4) क़लम ज़ाहिर होगा (इस इरशाद में फ़ाउन्टेन पेन, पेन्सिल, टाइपराइटर, प्रन्टिंग प्रेस और कम्प्यूटर वग़ैरा सभी आ गए)।
5) जूते का तुसमा (शोल) बातें करेगा और वह कुछ सुना देगा जो उसके पसे (पीछे) ग़ीबत घर में होता रहा (टेप रिकॉर्ड और इसी क़िस्म के जदीद आलात (नई मशीनों) की तरफ़ सरीह़ (खुला) इशारा है)।
6) एक शहर का ताजिर दूसरे शहर के ताजिर से मशवरा करेगा (टेलीफ़ोन की तरफ़ वाज़ेह़ इशारा है आज कल इसी के ज़रिया शहर शहर बल्कि मुल्क मुल्क के ताज़िर बाहमी (आपसी) मशवरा करते हैं)।

तिज़ारती और इक़्तिसादी (Economical) ख़बरें :–

1) तिजारत आ़म होगी।
2) दौलत की रेल पेल होगी।
3) मर्द और औरत मिलकर तिजारत करेंगे।
4) सूद से कोई न बचेगा जो बचेगा उसको सूद का गुबार ज़रूर पहुँचेगा।
5) फ़ुरात से सोने का ख़ज़ाना ज़ाहिर होगा (पेट्रोल को काला सोना कहा जाता है इसके बेशुमार ज़ख़ीरे इस इलाक़े में निकले हैं)
6) फ़ुरात से सोने का पहाड़ ज़ाहिर होगा तो लोग उसके बारे में सुनकर इधर जायेंगे, जिसके क़ब्ज़े में यह होगा वह कहेगा कि अगर हम दूसरे

लोगों को इसके लेने की इजाज़त देंगे तो वह सब का सब ले जाएँगे, इसपर लोग क़त्ल किये जाएँगे (तेल का मौजूदा आ़लमी बोह़रान (झगड़ा) शाह सऊ़द और सद्दाम हुसैन का क़त्ल एराक़ लीबीया पर अमरीकी महाज़ (फ़ौज) का ह़मला नीज़ मुख़्तलिफ़ अक़वाम (क़ौमों) की इसी मस्अले पर बाहमी (आपसी) कश्मकश इस पर गवाह है।

7) बहुत सी काने निकलेंगी जिन पर सिर्फ़ कमीनों का क़ब्ज़ा होगा

सियासी और मुल्की ख़बरें :–

1) मुसलमान, मुसलमान को कत्ल करेंगे, और बुतों के पुजारियों को नज़र अन्दाज करेंगे।

2) कुछ क़बीले मुशरिकीन से मिल जाएँगे, कुछ क़बीले बुतों की पूजा शुरू कर देंगे।

3) यह लोग इस्लाम से ऐसे गुज़र जाएँगे जैसे तीर निशाने से (पाकिस्तान और दूसरे इस्लामी मुल्कों में जो लोग क़ौम परस्ती, सूबा (राज्य) परस्ती और आस़ार (यादगार) परस्ती की दावत देते हैं वह इस्लाम से उसी तरह दूर हैं जैसे तीर निशाने से ख़ता होकर दूर जा पड़ता है)।

4) जिहाद का बस शोरो गुल होगा (चुनान्चे हम देख रहे हैं आ़लमे इस्लाम के अहम मामलात एह़तिजाजों (धरना), हड़तालों, क़रारदादों की नज़्र हो जाते हैं।

5) ख़ाइन (ख़यानत करने वाले) को अमीन बनाया जाएगा।

6) ह़ाकिम बदअमल बदकिरदार होंगे।

तिब्बी व मुआ़लजाती ख़बरें :–

1) फ़हश कारी (बुरे कामों) से नई – नई बीमारियाँ पैदा होंगी।

2) लोग अचानक मरेंगे।

3) फ़ालिज और ह़रकते क़ल्ब बन्द होना (हार्ट अटैक) आ़म हो जाएगा।

यह ग़ैबी ख़बरनामा आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया?———— और देखा कि कैसी कैसी ''ग़ैब की बातें'' हैं जो आज हम अपनी आँखों से देख रहे हैं और नक़्शे इबरत बने हुए हैं ———— यह ''ग़ैब की बातें'' इस हक़ीक़त पर गवाह हैं कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह के फज्लो करम से ''ग़ैब'' हासिल था ———— एक अ़रब आ़लिम शैख़ अहमद बिन मुहम्मद बिन सिद्दीक़ ग़मारी हसनी ने एक फ़ाज़िलाना किताब लिखी है जिसका उ़नवान है ———— ' ''مطابقة الاختر اعات العصريه لما اخبربه سيّد البريه''
(इस्लाम और अ़सरी ईजादात : मुफ़्ती अहमद मियाँ बरकाती) मुसन्निफ़ (लेखक) ने इस किताब में उन ग़ैब की बातों को जमा किया है जो हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाई हैं ———— पढ़ पढ़ कर हैरत बढ़ती जाती है और येह यक़ीने कामिल हो जाता है कि माज़ी (भूतकाल/Past) और मुस्तक़बिल (भविश्यकाल/Future) हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने आइना की तरह रौशन थे ———— मौला तआ़ला हमें इस यक़ीन पर साबित रखे कि अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़लो करम से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सब कुछ अ़ता फ़रमाया है। (आमीन)

ग़ैब की बात

1– कुरआने हकीम सूरे इन्शिराह आयत नं0 4
2– कुरआने हकीम,सूरे बक़रा आयत नं0 151
3– कुरआने हकीम,सूरे अ़लक़ आयत नं0 4, 5
4– कुरआने हकीम,सूरे आले इमरान आयत नं0 179
5– कुरआने हकीम,सूरे जिन आयत नं0 26
6– कुरआने हकीम,सूरे हूद आयत नं0 49
7– कुरआने हकीम,सूरे तकवीर आयत नं0 24
8– कुरआने हकीम,सूरे ज़ोहा आयत नं0 8
9– कुरआने हकीम,सूरे यूसुफ़ आयत नं0 86
10– कुरआने हकीम,सूरे यूसुफ़ आयत नं0 68
11– कुरआने हकीम,सूरे इब्राहीम आयत नं0 11
12– कुरआने हकीम,सूरे अनआम आयत नं0 104
13– मुफ़्ती अहमद मियाँ बरकाती ने ''इस्लाम और अ़सरी ईजादात'' के नाम से इसका तर्जमा किया है जो कई बार शाए हो चुका है। (मुरत्तिब)

आल इण्डिया तबलीग़े सीरत के अग़राज़ो मक़ासिद

- मुसलमानों में मज़हबी रुजहान पैदा करना, उन्हें फ़राइज़ और वाजिबात की तरग़ीब देना।
- दिलों में इ़श्क़ो इत्तिबा–ए–रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जज़्बा बेदार करना।
- मुसलमानों के बीच इत्तिह़ाद व इत्तिफ़ाक़ की राह हमवार (बराबर) करना।
- स्कूलों में पढ़ने वाले छोटे बच्चों, नौजवानों और कारोबार से जुड़े हुए या माजूर हो चुके उ़म्र रसीदा लोगों के लिये दीनी तालीम का इन्तिज़ाम करना।
- इस्लाम और मुसलमानों से मुतअ़ल्लिक़ जो ग़लत फ़हमियाँ पैदा की जा रही हैं उनका दलाइल (सुबूतों) की रोशनी में माकूल जवाब देना।
- आसान ज़बान में आम लोगों के लिये मज़हबी किताबें नश्र (प्रकाशित) करना।
- जगह जगह दीनी व मज़हबी नशिस्सतें (मह़फ़िलें) करना।
- क़ुदरती आफ़ात या फ़सादात के सबब तबाह ह़ाल लोगों की इमदाद (मदद) करना।

अल्लाह के फ़ज़्ल से मज़कूरा (बताए गए) उमूर (काम) तीन शोबाजात (डिपार्टमेन्ट)
1.शोब–ए–तालीम
2. शोब–ए–तबलीग़
3. शोब–ए–नशरो इशाअ़त के ज़रिये अन्जाम दिये जा रहे हैं।

ALL INDIA TABLEEGH-E-SEERAT, W.B.
6, TALTALLA LANE, KOLKATA-700 014
MOBILE : 9830367155

मदीनतुल उ़लूम इन्सटीट्यूट तोपसिया

तोपसिया रोड, खटाल गली, निकट कस्टिया मैदान, कोलकाता 39

हमारे शोबे जात (डिपार्टमेन्ट)

1. शोब–ए–अत्फ़ाल
2. शोब–ए–हिफ़्ज़
3. शोब–ए–इशाअ़त
4. शोब–ए–तबलीग़
5. शोब–ए–बलिग़ान
6. अलबरकात कम्प्यूटर सेन्टर

वग़ैरा क़ाएम हो चुके हैं।

जिनसे आस पास के लोग बड़ी तादाद में फ़ैज़याब हो रहे हैं और इन्शा अल्लाह तआ़ला जल्द ही अरबिक स्पोकेन क्लासेज़ भी शुरु किया जाने वाले है

इस लिये अह़बाबे अह्ले सुन्नत से गुज़ारिश है कि इशाअ़ते दीन व सुन्नीयत के लिये हमारे दस्तो बाज़ू बनें, मुफ़ीद मशवरों से नवाज़ें और सदक़ात व अ़तियात (तोहफों) के ज़रिये इदारे की मदद करें।

तफ़सीलात के लिये राबता करें।

(मौलाना) मुह़म्मद मुजाहिद ह़ुसैन ह़बीबी

मोहतमिम : मदीनतुल उ़लूम इन्सीटीट्यूट तोपसिया

मो0: 9830367155

MADINATUL ULOOM INSTITUTE

4B/1A, Kustia Maidan, Topsia, Kolkata-39
MOBILE : 9830367155

तबलीगे सीरत की उर्दू किताबें

आम लोगों और नई नस्लों को मज़हबे इस्लाम से जोड़ने के लिये बुनियादी मालूमात पर मुशतमिल आसान ज़बान में अलग अलग उ़नवानात (टापिक्स) के तहत अह्ले सुन्नत की किताबों का ह़सीन गुलदस्ता।

1. अह़ादीसे शफ़ाअ़त	:	आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा खाँ
2. इ़ल्मे ग़ैब	:	प्रोफ़ेसर डाक्टर मसऊ़द अह़मद
3. ताज़ीमो तौक़ीर	:	प्रोफ़ेसर डाक्टर मसऊ़द अह़मद
4. तक़लीद	:	प्रोफ़ेसर डाक्टर मसऊ़द अह़मद
5. नमाज़ की अहमियत	:	मुह़म्मद मुजाहिद हु़सैन ह़बीबी
6. इ़ल्मे दीन की अहमियत	:	मुह़म्मद मुजाहिद हु़सैन ह़बीबी
7. तौबा की अहमियत	:	मुह़म्मद मुजाहिद हु़सैन ह़बीबी
8. रिज़्क़े ह़लाल की अहमियत	:	अ़ल्लामा अ़ब्दुल मोबीन नौमानी
9. औ़रत और हमरा मुआ़शरा	:	अ़ल्लामा अ़ब्दुल मोबीन नौमानी
10. औ़रत और परदा	:	प्रोफ़ेसर डाक्टर मसऊ़द अह़मद
11. ह़याते इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा	:	मुह़म्मद मुजाहिद हु़सैन ह़बीबी
12. ह़याते मुजहिदे मिल्लत	:	मुह़म्मद मुजाहिद हु़सैन ह़बीबी
13. शराब के नुक़सानात	:	अ़ल्लामा अ़ब्दुल मोबीन नौमानी
14. लॉटरी की तबाह कारियाँ	:	अ़ल्लामा अ़ब्दुल मोबीन नौमानी
15. रवादारी	:	प्रोफ़ेसर डाक्टर मसऊ़द अह़मद
16. ख़ौफ़े ख़ुदा की अहमियत	:	मुह़म्मद मुजाहिद हु़सैन ह़बीबी

TABLEEGH-E-SEERAT
6, TALTALLA LANE, KOLKATA-700 014
MOBILE : 9830367155

تبلیغ سیرت کی مطبوعات

Published by

MADINATUL ULOOM INSTITUTE, TOPSIA

ALL INDIA TABLEEGH -E- SEERAT KOLKATA, WB

E-mail: tableegh.e.seerat@gmail.com Mob. 9830367155